

मुक्ति

Libertalia

पहला डिजिटल राष्ट्र

पुस्तक ।

मुक्ति

Luc Arden

एथेंस 2026

प्रकाशक:

LP Development

मेरी पत्नी को समर्पित,
जिसने कभी भी
मेरे हर पागल सपने का साथ देना नहीं छोड़ा।

Luc

© 2026 Luc Arden
प्रथम डिजिटल संस्करण, 2026

कृति

LIBERTALIA

पहला डिजिटल राष्ट्र

LIBERTALIA, Luc Arden की एक समग्र कृति है, जो **तीन अलग-अलग पुस्तकों** के माध्यम से विकसित होती है; इनमें से प्रत्येक उसी विचार को एक अलग दृष्टिकोण से देखती है।

पुस्तक I

मुक्ति

पहली पुस्तक में लेखक **Mike Harris** की यात्रा का वर्णन करते हैं—एक साधारण, रोज़मर्रा के व्यक्ति की, जो उन बातों पर प्रश्न उठाने का निर्णय लेता है जिन्हें सामान्यतः स्वाभाविक मान लिया जाता है।

शक्तिशाली हितों, सत्ता की संरचनाओं और ऐसी दुनिया का सामना करते हुए जिसे बदलना असंभव-सा लगता है, Mike एक विचार को एक दृष्टि में बदलने का प्रयास करता है: एक अधिक स्वतंत्र, अधिक न्यायपूर्ण और अधिक मानवीय दुनिया की रचना।

मुक्ति वह कहानी है, जिसके माध्यम से Libertalia की परिकल्पना जन्म लेती है।

पुस्तक II

खोया हुआ अध्याय

दूसरी पुस्तक में लेखक कहानी के दो मुख्य पात्रों—**Mike** और उसकी पत्नी—के माध्यम से एक अलग प्रश्न की पड़ताल करते हैं:

क्या Mike की परिकल्पना आज की दुनिया में वास्तविकता बन सकती है?

खोया हुआ अध्याय कथा और वास्तविकता के बीच एक सेतु बनाने का प्रयास करता है, और एक ऐसे संभावित मार्ग का वर्णन करता है जिसके माध्यम से कोई विचार धीरे-धीरे वास्तविक रूप ले सकता है।

पुस्तक III

स्वतंत्रता का मार्ग

तीन खंडों में

तीसरी पुस्तक में, दृष्टि सिद्धांत से आगे बढ़कर संरचना का रूप लेती है।

लेखक उन **सिद्धांतों, नियमों और संस्थाओं** को रूप देने का प्रयास करते हैं, जो समाज को संगठित करने के एक अलग तरीके को आधार दे सकते हैं।

स्वतंत्रता का मार्ग के तीन खंडों में लोकतंत्र, न्याय, अर्थव्यवस्था, प्रौद्योगिकी, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, दैनिक जीवन और उन सामाजिक परिवर्तनों से जुड़े विषयों की पड़ताल की जाती है, जो भविष्य को आकार दे सकते हैं।

साथ ही, यह कृति उन प्रश्नों के निकट जाने का प्रयास करती है जिन्हें तकनीकी और सामाजिक विकास की तीव्र गति पहले ही जन्म दे रही है—यहाँ तक कि तब भी, जब आज की संस्थाएँ अभी उनके उत्तर देने के लिए तैयार नहीं हुई हैं।

स्वतंत्रता का मार्ग Mike के सपने को एक विचार से आगे बढ़ाकर एक अलग दुनिया के लिए सिद्धांतों के एक समग्र ढाँचे में बदलने का प्रयास है।

शायद सब कुछ यहीं से शुरू होता है

जिस स्थान और राज्य में यह कहानी घटित होती है, उनका चयन संयोगवश किया गया है।

इस पुस्तक का उद्देश्य केवल एक साधारण व्यक्ति की कहानी सुनाना या पाठक का मनोरंजन करना नहीं है।

इसका उद्देश्य है कि पाठक कुछ क्षण ठहरे और आने वाली दुनिया के बारे में सोचे।

हमारा जीवन पहले ही बदल रहा है।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता, प्रौद्योगिकी, अर्थव्यवस्था, काम, सत्ता और यहाँ तक कि स्वतंत्रता की अवधारणा स्वयं ऐसी गति से बदल रही है, जैसी शायद मानवता ने पहले कभी नहीं देखी। इस संक्रमण के बीच, यह पुस्तक—दूसरी पुस्तक (खोया हुआ अध्याय) और तीन खंडों वाली तीसरी पुस्तक (स्वतंत्रता का मार्ग) के साथ—सिर्फ एक कहानी कहने से कुछ अधिक करने का प्रयास करती है:

यह एक अलग भविष्य की ओर जाने वाले संभावित मार्गदर्शक के रूप में काम करने का प्रयास करती है।

इसीलिए इसका सार भाषा या शब्दों की पूर्णता में नहीं है। **इसका
सार उन विचारों में है, जो उनके पीछे साँस लेते हैं।**

उन प्रश्नों में, जिन्हें वे जन्म देते हैं।

**उन बातों पर प्रश्न उठाने में, जिन्हें आज हम स्वाभाविक मान लेते
हैं।**

उद्देश्य यह है कि पाठक परिवर्तन को केवल पढ़े नहीं, बल्कि
कहानी के माध्यम से उसे **देखे, महसूस करे और जीए।**

ये तीनों पुस्तकें यह दावा नहीं करतीं कि वे जानती हैं कि मानवता
का भविष्य कैसा होना चाहिए। **लेकिन वे यह सुझाव देती हैं कि
शायद एक दूसरा रास्ता भी है।**

एक अधिक स्वतंत्र, अधिक न्यायपूर्ण, अधिक मानवीय दुनिया की
ओर जाने वाला रास्ता। और शायद इन पन्नों में छिपा सबसे बड़ा
विचार अंततः बहुत सरल है:

**स्वतंत्रता तब शुरू नहीं होती जब कोई और हमारे लिए दुनिया
बदलता है।**

**यह उस क्षण शुरू होती है जब हम विश्वास करते हैं कि एक
अलग दुनिया सचमुच अस्तित्व में आ सकती है।**

यदि ये तीन पुस्तकें केवल एक व्यक्ति को भी भविष्य को अलग
नज़र से देखने के लिए प्रेरित कर सकें, तो **वे पहले ही कुछ
महत्वपूर्ण हासिल कर चुकी होंगी।**

क्योंकि हर बड़ा परिवर्तन, वास्तविकता बनने से पहले, **पहले एक
विचार था।**

और हर विचार को कभी न कभी जरूरत पड़ी
**ऐसे लोगों की, जिन्होंने उस पर विश्वास करने का
साहस किया।**

अध्याय एक

एक और खाली दिन

अपार्टमेंट 101

एक और दिन।

वही।

खाली।

माइक ने दरार पड़े मग में थोड़ी चाय डाली और रसोई की छोटी मेज़ पर बैठ गया। उसके सामने बिखरे बिल ऐसे पड़े थे जैसे किसी ऐसे अपराध के सबूत हों, जिसे करने की उसे कोई याद ही न हो।

बिजली का बिल लगभग उसकी तनख्वाह के बराबर था।

उसका स्वास्थ्य बीमा दो सप्ताह पहले समाप्त हो चुका था।

किराया चार दिन में देना था।

मेज़ के किनारे, एक ऐसी छुट्टी के स्मारिका-चुंबक के नीचे जिसे वह मुश्किल से याद कर पाता था, लाल अक्षरों में छपा अंतिम नोटिस पड़ा था। उसने पिछली रात उसे खोला था, पहली दो पंक्तियाँ पढ़ी थीं, फिर ठीक उसी तरह मोड़ दिया था जैसे वह

आया था — मानो उसे फिर से लिफ़ाफ़े का आकार दे देने से समस्या किसी और के पास लौट जाएगी।

ऐसा नहीं हो सकता था।

फ्लैट में सन्नाटा था। बस फ्रिज की धीमी भनभनाहट और दूर के ट्रैफ़िक की आवाज़ थी, जो शहर को पहले ही भोर की ओर धकेल रही थी। कहीं बाहर लोग चलने लगे थे। इंजन शुरू हो रहे थे। दरवाज़े बंद हो रहे थे। लिफ़्टें हर मंज़िल पर रुक रही थीं।

थके हुए शरीरों की एक और सेना घर से निकल रही थी, ताकि इतना कमा सके कि फिर घर लौट पाए।

माइक ने मग को दोनों हाथों से कसकर पकड़ लिया।

चाय खौलती हुई गर्म थी, फिर भी उसने पी ली।

उसने महीनों पहले चाय में चीनी डालना छोड़ दिया था।

स्वास्थ्य के लिए नहीं।

पैसों के लिए।

बचत करने का यह हास्यास्पद तरीका था — लगभग कुछ भी नहीं, ऐसी चीज़ जिसे सामान्य जीवन जीने वाला कोई व्यक्ति शायद नोटिस भी न करे। लेकिन अब माइक हर चीज़ नोटिस करता था। चीनी। बस का किराया। हीटिंग। दूध की दूसरी बोतल। बच्चों के पसंदीदा बिस्कुट का एक पैकेट।

छोटी-छोटी चीज़ें फ़ैसले बन गई थीं।

और फ़ैसले अपराधबोध बन गए थे।

उसके पास वाली कुर्सी पर पहली नौकरी की वर्दी पड़ी थी: गहरे रंग की पतलून, सफ़ेद कमीज़, काले जूते जिन्हें बस उतना ही चमकाया गया था जितना ज़रूरी था, क्योंकि अब उसके पास चीज़ों को उनकी वास्तविकता से बेहतर दिखाने का धैर्य नहीं बचा था। कमरे के दूसरी ओर, शयनकक्ष के दरवाज़े के हैंडल पर उसकी दूसरी नौकरी की जैकेट टंगी थी।

डिलीवरी।

रातें।

सप्ताहांत।

बारिश हो या गर्मी, कोई फ़र्क नहीं पड़ता था। लोग खाना मँगाते रहते थे। वे चाहते थे कि सब कुछ जल्दी पहुँचे। और कॉफ़ी ठंडी हो तो शिकायत भी करते थे।

वह दो नौकरियाँ करता था, फिर भी सिक्के गिनता था।

कभी वह उन्हें चुपचाप गिनता, ताकि जेन न सुन सके।

कभी दिखावा करता कि बस जेबों में कुछ ढूँढ़ रहा है।

कभी आखिरी सिक्का रसोई के काउंटर पर छोड़ देता, इस उम्मीद में कि बच्चों में से कोई सोचेगा कि वह हमेशा से वहीं पड़ा था।

यही बात उसकी समझ में नहीं आती थी।

वह आलसी नहीं था। गैरजिम्मेदार नहीं था। किसी के आकर उसे बचाने का इंतज़ार नहीं कर रहा था। वह सूर्योदय से पहले उठता, अँधेरा होने के बाद घर लौटता, हर संदेश का जवाब देता, जितना चुका सकता चुकाता, जो नहीं चुका सकता उसे टालता, और अपने से अधिक अमीर, अधिक धीमे और कम थके लोगों से माफ़ी माँगता।

फिर भी हर महीना उसी तरह समाप्त होता था।

स्क्रीन पर एक संख्या।

बहुत छोटा बैलेंस।

बहुत महँगी ज़िंदगी।

माइक ने फोन देखा।

सुबह 6:12।

उसे निकलने से पहले अठारह मिनट मिले थे।

शहर के उसे फिर से निगल लेने से पहले अठारह मिनट का सत्राटा।

उसने बैंकिंग ऐप खोला, हालाँकि उसे पहले से पता था कि वह क्या दिखाएगा। स्क्रीन धीरे-धीरे लोड हुई, मानो मशीन को भी उसे सच दिखाने में शर्म आ रही हो।

उपलब्ध शेष राशि: 43.18

वह उसे घूरता रहा।

तैंतालीस पाउंड और अठारह पेंस।

बाईस दिन काम करने के बाद यही बचा था।

सुरक्षित महसूस करने के लिए पर्याप्त नहीं।

यह कहने के लिए बहुत ज़्यादा कि उसके पास कुछ नहीं है।

यह गरीबी का सबसे क्रूर रूप था: वह गरीबी जो आपको हर चीज़ का हिसाब लगाते रहने पर मजबूर करे।

उसने ऐप बंद कर दिया।

एक पल के लिए उसने कल्पना की कि फोन दीवार पर दे मारे और टुकड़े-टुकड़े कर दे। इसलिए नहीं कि समस्या फोन था, बल्कि इसलिए कि वही एक ऐसी चीज़ थी जिसे तोड़ना उसके बस में था।

किराए को नहीं तोड़ा जा सकता था।

कर को नहीं तोड़ा जा सकता था।

बीमा, कर्ज़, ब्याज, ईंधन, खाना, बिजली, फॉर्म, जुमनि,
हस्ताक्षर, नियम, कतारें, कोड, सत्यापन — और वे हज़ार अदृश्य
हाथ, जो किसी आदमी को अपने पैसे छूने का मौका मिलने से
पहले ही उसकी जेब में पहुँच जाते थे — इनमें से किसी को नहीं
तोड़ा जा सकता था।

आप बस मेज़ पर बैठकर सस्ती चाय पी सकते थे।

उसके पीछे केतली ने क्लिक की आवाज़ की, हालाँकि पानी पहले
ही उबल चुका था।

आवाज़ सुनकर वह चौंक गया।

उसे अपने भीतर यह बात नापसंद थी।

इन दिनों हर छोटी आवाज़ उसके शरीर में बुरी ख़बर की तरह
उतरती थी।

वह उठा, बिजली का बिल हाथ में लिया और फिर पढ़ा।
इसलिए नहीं कि उसे उसके बदल जाने की उम्मीद थी, बल्कि
इसलिए कि लोगों की एक अजीब आदत होती है — वे आपदाओं
को बार-बार पढ़ते हैं, मानो अंकों के बीच कहीं थोड़ी-सी दया
छिपी हो।

वहाँ कोई दया नहीं थी।

देय राशि: 1,184.76

उसके मुँह से एक छोटी-सी हँसी निकली।

असली हँसी नहीं।

वह हँसी जो तब निकलती है जब गुस्से के लिए कोई और रास्ता नहीं बचता।

होटल की नौकरी से उसकी तनख्वाह कटौतियों से पहले 1,220 थी। कर, बीमा, आवागमन, भोजन और बाकी हर उस चीज़ के बाद, जिसकी माँग दुनिया उससे केवल अपने भीतर साँस लेते रहने के विशेषाधिकार के बदले करती थी, लगभग कुछ नहीं बचता था।

वह एक बिल अकेला ही पूरे एक महीने की सुबहों के बराबर था।

एक महीना पैरों पर खड़े रहने का।

एक महीना — जी सर, नहीं सर, माफ़ कीजिए सर।

एक महीना उन अजनबियों पर मुस्कुराने का, जिनकी नज़रें उसके आर-पार चली जाती थीं।

उसने कागज़ को असामान्य सावधानी से मेज़ पर रख दिया, मानो वह नाज़ुक हो।

फिर उसने फ्लैट के चारों ओर देखा।

उसमें कुछ भी भयावह नहीं था। और यही सबसे बुरी बात थी। वह जेल की कोठरी नहीं थी। उसमें एक खिड़की थी, सोफ़ा था,